पूरण पुराण अरु पुरुष पुराण परिपूरण,
बतावैं न बतावैं और उक्ति को।
दरशन देत जिन्हैं दरशन समुझैं न,
नेति-नेति कहैं वेद छाँड़ि आन युक्त को।
जानि यह केशोदास अनुदिन राम राम;
रटत रहत न डरत पुनरुक्ति को।
रूप देहि अणिमाहि गुण देहि गरिमाहि,
भक्ति देहि महिमाहि नाम देहि मुक्ति को।।3।।

शब्दार्थ—पूरण = सम्पूर्ण, समस्त। पुराण = प्राचीन। परिपूर्ण = सब प्रकार से पूर्ण। उक्ति = बात, कथन। दरशन देत = दर्शन देते हैं। दरशन = दर्शन, षट्शास्त्र। नेति-नेति = यह भी नहीं; अर्थात् अगम्य। युक्त = युक्ति, उपाय। अनुदिन = प्रतिदिन, नित्य। पुनरुक्ति = किसी एक शब्द की अथवा कथन की पुनरावृत्ति काव्यशास्त्र में पुनरुक्ति दोष माना जाता है। रूप = सौंदर्य। अणिमा = आठ सिद्धियों में से पहली सिद्धि जिसके द्वारा साधक अरगुरूप ग्रहण करके अदृश्य हो जाता है।

गरिमा = इस सिद्धि के द्वारा साधक यथेच्छा अपना देह-भार बढ़ा सकता है। महिमा = इस सिद्धि से साधक यथेच्छा अपनी देह का विस्तार कर सकता है।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि केशव ने राम की महिमा का वर्णन करते हुए बताया है कि राम भक्त-वत्सल और समस्त सिद्धियों को प्रदान करने वाले हैं।

व्याख्या—समस्त पुराण और प्राचीन लोग राम के विषय में इसके अतिरिक्त और कोई बात नहीं कहते कि वह सब प्रकार से पूर्ण है; अर्थात् राम की परिपूर्णता शास्त्र और लोक दोनों ही आधारों से निर्विवाद सिद्ध है। जिस राम के स्वरूप को दर्शन नहीं समझ पाते और वेद भी अन्य युक्ति को छोड़कर उनके स्वरूप के विषय में 'यह भी नहीं, यह भी नहीं कहकर अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं, वे ही राम भक्त-वत्सलता के कारण अपने भक्तों को सहज ही दर्शन दे देते हैं। उनकी इस अपार महत्ता एवं भक्त-वत्सलता को जानकर; कवि केशव कहते हैं, कि मैं पुनरुक्ति दोष का भय त्याग कर प्रतिदिन राम-राम रटता रहता हूँ। राम का सौंदर्य-वर्णन अणिमा सिद्धि को, गुण-वर्णन अणिमा सिद्धि को, भक्ति महिमा सिद्धि को और नाम-स्मरण मुक्ति को प्रदान करता है।

विशेष—इस छंद में केशव ने राम के दो रूपों की ओर संकेत किया है—अलौकिक रूप और भक्त-वत्सल-रूप। अलौकिक रूप में वे दर्शन और वेदों से भी भाग्य नहीं हैं और भक्त-वत्सल-रूप में वे सहज ही रीझ कर भक्त पर कृपा करने वाले हैं। तुलसी ने भी राम के रूप का ऐसा-ही वर्णन किया है। यथा—

(अ) नेति नेति जेहि वेद निरूपा।

(आ) ध्यान न पावहिं जाहि मुनि नेति नेति कह वेद।

(इ) जेहि जन पर ममता अति छोहू। जेहि करुना करि कीन्ह न कोई। —तुलसी

अलंकार—अनुप्रास, यमक, सम्बन्धातिशयोक्ति।